हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-X (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): T-10 & 11/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	1	3	4	4	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Meena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहिये क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) गदराने तन गोरटी, ऐपन-आड़ लिलार।
हूठयौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार।।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारी के दोहे के संकलन बिहारी रत्नाकर (जगन्नाथ रत्नाकर) से लिया गया है।

इन दोहे में बिहारी रीतिकालीन मानसिकता से युक्त देहमूलक सौंदर्य का वर्णन करते है।

व्याख्या - बिहारी कहते है कि गाँव की युवती का शरीर गदराया हुआ है अर्थात् आकर्षक है तथा ललाट पर उसने ऐंपन का लेप किया है। वह कमर में हाथ रखकर इठलाती हुई चल रही है किन्तु गाँव से संबंधित होने के बावजूद अपने नयन रूपी दृगों से तीखे बाण चला रही है। इन बाणों ने नायक को घायल कर दिया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष

① रीतिकालीन देहमूलक सौंदर्य का प्रदर्शन बिहारी ने अन्यत्र भी किया है -

" अंग-अंग नग जगमगती, दीप शिखा सी देह।
दिया बुझाये ही रहयो, बड़ो उजेरो गेह।"

② रीतिकालीन देहमूलक श्रृंगार तत्कालीन सामन्तवादी प्रवृत्तियों की देन था।

③ उक्त पद्यांश में बिहारी की नगर के प्रति मोह तथा गाँव के प्रति पूर्वाग्रह दिखाई देता है। ऐसा ही वे अन्यत्र भी दर्शाते हैं -

" नागरी विविध विलास तजी, बसे गवेलिन माहि।"

④ बिहारी की भाषा ब्रजभाषा है। इस भाषा के संदर्भ में जार्ज ग्रियर्सन ने बिहारी को यूरोप के श्रेष्ठ कवियों से श्रेष्ठ बताया है।

⑤ बिहारी के भाषा की समास क्षमता व भावों की समाहार क्षमता का अद्भुत समन्वय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश छायावाद के श्रेष्ठ कवि 'निराला' की लंबी कविता 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत है।

इन पंक्तियों में निराला ने राम की मानसिक स्थिति का वर्णन प्रस्तुत किया है।

व्याख्या - युद्ध में प्रथम दिन की हार से निराश राम के मानसिक स्थिति के संदर्भ में निराला कहते है कि इस निराशा में बिजुरी के समान प्रकाशमान सीता की छवि का उदय होना राम को आत्मविश्वास से युक्त करता है। तब इन्हें विवाह पूर्व स्मृतियों की याद आती है। मिथिला के वन में सीता तथा राम की नयनों से वार्तालाप उन्हें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्मरण होती है। तब उन्हें उस वन की असीम सुन्दरता का स्मरण आया जहाँ सबकुछ पवित्र एवं माधुर्य से युक्त था।'

विशेष -

① प्रस्तुत पंक्तियाँ राम के मानसिक संघर्ष को दर्शाती है, जो ~~राम~~ ईश्वर के मानवीकरण को स्पष्ट करता है।

② उक्त पंक्तियों में निराला ने अपनी भाषिक क्षमताओं का प्रयोग करते हुये स्थान विशेष के लिए उपयुक्त शब्द का चयन किया है।

③ बिम्ब क्षमता का दर्शनीय उदाहरण है -

" नयनों का नयनों से गोपन प्रिय सम्भाषण।"

④ 'कविता क्या है' निबंध में शुक्ल जी ने मानवेतर प्रकृति को कविता की भाषा के रूप में सम्मिलित करने का आग्रह किया था। यहाँ यह पूर्णतः प्रस्तुत है -

" गाते खग - नव - जीवन - परिचय - तरु मलय - वलय "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति-कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला?

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यावतरण नवजागरण चेतना के श्रेष्ठ कवि 'मैथिली शरण गुप्त' की कविता भारत-भारती से अवतरित है।

इन पंक्तियों में गुप्तजी ने भारत की उन्नति एवं अवनति के कारण स्पष्ट किया है।

व्याख्या - गुप्त जी कहते हैं कि उन्नति के शीर्ष पर जाना तथा अवनति के गर्त में जाना दोनों ही प्रकृति का नियम है। अतः वर्तमान में भारत की अवनति उसी नियम का परिफल है। अर्थात प्राचीनकाल में भारत की उत्कर्ष पर अवस्थिति थी इस कारण ब्रिटिश काल में यह अपकर्ष की स्थिति में है। (ब) जिनका उत्थान होता है, उनका ही पतन संभव है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) उक्त पंक्तियों में नवजागरण चेतना के तत्व आत्म आलोचना तथा आत्म गौरव की उपस्थिति है।

(2) गुप्त जी ने आत्म आलोचना करते हुये अन्यत्र कहा है कि-

" सोते रहो हिन्दुओं, हम मौज करते यहाँ।"

(3) उन्नति- अवनति के अखंड नियम को ही प्रसाद ने कामायनी में सुख- दुख के नियम के रूप में प्रकट किया है।

" विषमता की इस पीड़ा से, स्पन्दित होता विश्व महान।"

(4) उक्त पंक्तियों की भाषा तत्समी खड़ी बोली है।

(5) महावीर प्रसाद द्विवेदी का मानना था कि अभिधा में कविता करना ही श्रेष्ठ होता है। गुप्त जी की कविता में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है।

इन पंक्तियों में भीष्म युधिष्ठिर के प्रश्नों का जवाब दे रहे हैं।

व्याख्या :- भीष्म युधिष्ठिर को समझाते हुये कह रहे हैं कि जो न्याय को अपनाने से मना करता है, युद्ध का भागीदार भी वही है। इसलिए तुम पापी के द्वारा पाप कर्म किये जाने को नरक का मार्ग मानो, न कि पाप को ललकारने को।

विशेष

① इन पंक्तियों में दिनकर का युद्ध दर्शन प्रकट हुआ है। वे युद्ध को पाप के विरुद्ध ही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उचित मानते हैं।

(2) वे अन्यत्र भी युधिष्ठिर से कहते हैं-

" विकृत औषधि के सिवा उपचार क्या
शमित होगा नहीं वह मिष्ठान्न से।"

अर्थात् पाप को युद्ध से ही समाप्त किया जा सकता है।

(3) दिनकर ने युद्ध समाप्ति की ओर भी संकेत किया है-

" जब तक मनुज- मनुज का यह सुख भाग नहीं सम होगा।

(4) उक्त पद्यांश की भाषा तत्सम्‌ खड़ी बोली है।

(5) वीर रस का समावेश है।

प्रासंगिकता - उक्त पंक्तियाँ वर्तमान संदर्भ में भी प्रासंगिक है। भारत सरकार द्वारा वामपंथी उग्रवाद तथा आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई इसी दर्शन से प्रेरित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण-जलधि समान,
व्यथा से नीली लहरों बीच बिखरते सुख-मणिगण द्युतिमान।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यावतरण आधुनिक महाकाव्य 'कामायनी' से लिया गया है, जिसके लेखक जयशंकर प्रसाद है।

इन पंक्तियों में श्रद्धा मनु को सुख-दुख के संदर्भ में समझाती है।

व्याख्या - श्रद्धा कहती है कि सुख और दुख के इसी विषमता के कारण यह विश्व गतिशील है। इसी विषमता के कारण कर्म निश्चित होते है, जिसके यह इस पृथ्वी का एक वरदान है। जैसे सागर में अनन्त मोती विद्यमान है किन्तु वे अलग-अलग स्थानों पर उपस्थित है, उसी प्रकार तुम सुख-दुख भी विस्तृत है। उसी के प्रयास में तुम्हे समरसता लाने का प्रयास करना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

उक्त पंक्तियाँ सुख-दुख की निरन्तर प्रक्रिया को स्थापित करती है।

② इन पंक्तियों में प्रसाद के प्रत्यभिज्ञा दर्शन की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

③ उक्त पद्यांश की भाषा तत्समी खड़ी बोली है, जो प्रसाद गुण से युक्त है।

प्रासंगिकता - इन पंक्तियों के द्वारा विश्व में सुख-दुख की विषमता को समाप्त कर समरसता का संदेश दिया है। प्रसाद कामायनी में कहते हैं -

"समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था
चेतनता एक विलसती। आनन्द अखंड घना था।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष पर प्रकाश डालिये। 20

ब्रह्मराक्षस कविता मुक्तिबोध द्वारा रचित गहरे प्रतीकात्मकता से युक्त कविता है, जिसमें आद्यन्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का संघर्ष परिलक्षित होता है।

कविता का प्रतीक ब्रह्मराक्षस मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का प्रतीक है, जो 'ऐतिहासिक उत्तरदायित्व' पूरा न कर पाने के कारण आत्मसंघर्ष से जूझता है। मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का यह संघर्ष आत्म चेतस तथा विश्व चेतस के रूप में दिखाई देता है।

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी पूर्णतः विश्वचेतस हो जाना चाहता है किन्तु उसमें कुछ आंतरिकता शेष रह जाती है। जो आत्म संघर्ष का कारण है -

" आत्म चेतस किन्तु
इस व्यक्तित्व में थी प्राणमय अनबन
विश्वचेतस बेबनाव।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी संघर्ष के कारण अच्छे तथा उससे अधिक अच्छे का संघर्ष प्रारंभ होता है, जो मध्यजीवी बुद्धिजीवी को निरन्तर आत्मसंघर्ष में रत रखता है।

इसी आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति को प्रकट करते हुये मुक्तिबोध ने फैंटेसी का प्रयोग किया है -

" खूब ऊँचा जीना साँवला,
उसकी अँधेरी सीढ़ियाँ,
वे अभ्यान्तर निराले लोक की,
एक चढ़ना औ' उतरना
पुनः चढ़ना औ' लुढ़कना।"

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी इसी आत्मसंघर्ष की स्थिति में निरन्तर रहने के कारण एक त्रासद ~~परिणि~~ परिणति को प्राप्त करता है। जो ~~ये~~ स्थितियाँ उसे इस आत्मसंघर्ष में रखती है, वे स्थितियाँ पहले की तरह ~~सब~~ रह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाती है तथा उसका अन्त हो जाता है -

" पिस गया वह भीतरी और
बाहरी दो कठिन पाटो के बीच
कैसी ट्रेजिडी है नीच !"

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष का कारण स्पष्ट करते हुये मुक्तिबोध ने लिखा है कि इस त्रासद अन्त का कारण यह है कि वह समाज से कटकर ज्ञानार्जन करता रहा और अतिरेकवादी पूर्णता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता रहा।

" वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया
मरे पक्षी सा विदा ही हो गया।"

अंत में मुक्तिबोध स्पष्ट करते है कि वह मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी वह स्वयं ही है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जो उसे इसी ट्रैजिक अन्त की ओर ले जाती है। किन्तु वे शिष्य बनकर इस अतिरेकवादी पूर्णता की समाप्ति करने को भी संदर्भित करते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'ब्रह्मराक्षस' में मुक्तिबोध ने फैंटेसी का प्रयोग करते हुये मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का ग्रामर अन्त दर्शाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) कामायनी में निहित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कामायनी आधुनिक महाकाव्य के रूप में उपस्थित रचना है, जो प्रसाद के दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन को प्रकट करती है।

कामायनी मे व्यक्त जीवन दर्शन मानव तथा मानव सभ्यता के विकास की यात्रा को भी प्रकट करता है। कामायनी में स्पष्ट किया गया है कि अतिशय भोग विनाश का कारण बनता है जिससे दुख तथा चिंता की उत्पत्ति होती है।

प्रसाद श्रद्धा के माध्यम से मनु को जीवन दर्शन प्रस्तुत कराते हुये कहते है कि सुख-दुख की पीडा से ही यह विश्व स्पन्दित है तथा इसी की समाप्ति द्वारा समरसता की स्थापना संभव है।

प्रसाद स्पष्ट करते हुये कहते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है कि ~~वर्तमान~~ ~~मे~~ मनु की मूल समस्या ज्ञान, क्रिया तथा इच्छा में समन्वय का अभाव होने की है -

" ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से मिल न सके
यही विडम्बना है जीवन की।"

इसी असंबद्धता के कारण मानव का जीवन निराशावादी हो जाता है किन्तु जैसे ही उसे इन तीनों का संबंध ज्ञात होता है। सभी विषमताएं समाप्त हो जाती है।

कामायनी में प्रस्तुत यही जीवन दर्शन 'स्कन्दगुप्त' तथा अजातशत्रु में भी उपस्थित है। स्कन्दगुप्त में प्रसाद लिखते है कि 'बौद्धों का सा निर्वाण,' योगियों की सी समाधि तथा पागलों जैसी सम्पूर्ण

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विस्मृति ही जीवन का उद्देश्य होता है।

अजातशत्रु में वे स्पष्ट करते हैं कि - समस्त ~~क्रियाओं~~ क्रियाओं का अन्त अनन्त विश्राम में है।

कामायनी में यही समरसता की स्थिति श्रद्धा द्वारा मनु को दर्शायी गई है -

" समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती।
आनन्द अखंड घना था।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कामायनी का जीवन दर्शन सुख-दुख से परे आनन्द की स्थिति की प्राप्ति का संकेत है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

'राम की शक्ति पूजा' निराला की प्रसिद्ध कविता है, जो अपने अर्थ गर्भत्व के कारण विशिष्ट स्थान रखती है। निराला ने अपनी विशिष्टता का प्रदर्शन करते हुये रामत्व- रावणत्व संघर्ष को राष्ट्रीय आन्दोलन से संबद्ध किया।

'राम की शक्ति पूजा' की मूल समस्या है 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' है तथा ब्रिटिश कालीन भारत की भी यही समस्या है।

तत्कालीन नेतृत्वकर्ता गांधी भी राम की भाँति संशय से युक्त हैं तथा उनके मन में भी राम की भाँति अमानिशा के गहरे अंधकार की उपस्थिति है।

गांधी भी ब्रिटिश भौतिक शक्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के समक्ष नैतिक शक्ति के पतन की समस्या से जूझ रहे हैं।

"रावण अधमरत होकर भी अपना,
मैं हुआ अपर।"

ऐसे समय में जामवंत के रूप में निराला शक्ति की मौलिक कल्पना की प्रेरणा देते हैं। वे कहते हैं कि शक्ति नैतिक- अनैतिक से परे साधना के वशीभूत है अर्थात् तुम भी साधना द्वारा यह अर्जित करो।

साधना का तात्पर्य जन शक्ति को आन्दोलन से जोड़ना है। ऐसे ही समय निराला भी गांधी को यही प्रेरणा देते हैं।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान आई रुकावटें राम के समक्ष आई बाधाओं के समान ही हैं किन्तु जिस तरह ~~राम का~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'वह एक और मन रहा राम का जो न थका।'

इसी तरह राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थकों को भी आत्मविश्वास से परिपूर्ण करते है।

साधना के अन्त में महाशक्ति का राम के चेहरे में लीन होना राष्ट्रीय आन्दोलन में जनभागीदारी को संकेतित करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राम की शक्तिपूजा राष्ट्रीय आन्दोलन का रोजनामचा न हो किन्तु गहरे स्तर पर पूर्ण अभिव्यक्ति है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश उपन्यासों के महासागर 'गोदान' से अवतरित है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द है।

इन पंक्तियों में मालती पूंजीवाद में धन का महत्त्व उजागर करती है।

व्याख्या :- मालती धन का महिमामंडन करते हुये कहती है कि पूंजीवादी सभ्यता का आधार ही यह धन है। इस धन के समक्ष जाति, विद्या तथा कुल हीन है। मैं स्वयं भी ~~धन~~ ~~क~~ धन तथा चेहरा देखकर लोगों के साथ व्यवहार करती हूँ।

विशेष

(1) इन पंक्तियों के द्वारा ~~श्री~~ प्रेमचन्द 1936 में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

...या इस स्थान में प्रश्न ...या के अतिरिक्त कुछ ...लिखें। ...ease do not write ...ything except the ...estion number in ...is space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दहते हैं सामन्तवाद के बरक्स उभरते पूँजीवाद को स्थापित करते हैं।

② धन का इसी तरह का महिमामंडन भारतेन्दु के नाटक अंधेर नगरी में मिलता है।

"एक टका दो हम अपनी अपना धर्म बदलते हैं। धन के लिए धार्मिक एवं चारित्रिक दोनों बेचे।"

③ उक्त गद्यांश की भाषा हिन्दुस्तानी है तथा सहज तथा सुपाठ्य है।

प्रासंगिकता - वर्तमान संदर्भ में देखा जाये तो उक्त पंक्तियां सोलह आने सत्य है। वर्तमान में धन के महिमामंडन ने भ्रष्टाचार का सामाजिक स्वीकरण कर दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ

do not write except the number in ce)

(ख) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास के हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ हिन्दी निबंध के पुरोधा 'आचार्य शुक्ल' के निबंध 'कविता क्या है' से ली गई है। यह निबंध 'चिंतामणि' संकलन से है।

इन पंक्तियों में शुक्ल जी कविता तथा मानव में संबंध स्थापित करते है।

व्याख्या - शुक्ल जी कहते हैं कि कविता मनुष्य को स्वार्थ से ऊपर उठाकर लोक मंगल की साधनावस्था की ओर ले जाती है। इसी से मनुष्य स्वार्थी मनोवृत्तियों को त्यागकर अपना वास्तविक स्वरूप ग्रहण करता है। प्रकृति के वास्तविक रूप से परिचय ही मानव को प्रछन्नता से दूर करती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

'कविता क्या है' निबंध में शुक्ल जी ने मानव सभ्यता की प्रच्छन्नताओं को उभारते हुये कविता के द्वारा उन्हें हटाने का समाधान प्रस्तुत किया है।

(2) रूसो के विचार 'प्रकृति की ओर लौटो' इस गद्यांश में विद्यमान है।

(3) उक्त पंक्तियाँ तत्समी खड़ी बोली से युक्त है जो सहज तथा सुपाठ्य है।

(4) छायावादी काव्य के अनुरूप प्रकृति का सौंदर्य चित्रण है।

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियाँ वर्तमान संदर्भ में बेहद प्रासंगिक है. जब शहरी यांत्रिकता के कारण मानव का प्रकृति से संबंध कटता जा रहा है. ये पंक्तियाँ उसे प्रकृति की ओर लौटो का संकेत देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है। इस कठोर प्रत्यक्षवाद की समस्या बड़ी कठिन होती है। गुप्त-साम्राज्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ उसका दायित्व भी बढ़ गया है; पर उस बोझ को उठाने के लिये गुप्त-कुल के शासक प्रस्तुत नहीं, क्योंकि साम्राज्य-लक्ष्मी को वे अब अनायास और अवश्य अपनी शरण आनेवाली वस्तु समझने लगे हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाट्य परम्परा के शिखर जयशंकर प्रसाद के नवजागरण चेतना से युक्त नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ~~ली गई है~~ लिया गया है।

इन पंक्तियों में ~~स्कन्दगुप्त~~ राष्ट्रनीति को परिभाषित करते है।

व्याख्या - राष्ट्रनीति के संदर्भ कहते है कि यह कोरी कल्पना तथा दार्शनिकता का विषय नहीं है। यहाँ व्यक्ति को व्यवहारिक होना पड़ता है। जैसे-जैसे साम्राज्य की वृद्धि होती है, शासक पर राष्ट्रनीति निर्धारित करने का दबाव बढ़ जाता है।

किन्तु तत्कालीन गुप्त साम्राज्य के शासक इस विषय से अज्ञानी होकर विषय भोग में डूबे हुये है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishti1AS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

उक्त पंक्तियों गहरी राजनीतिक बात निहित है। जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

(2) राजनीति के संबंध ऐसा ही विचार 'आषाढ़ का एक दिन' में विपंगुमंजरी ने भी प्रस्तुत किया है।

(3) इन पंक्तियों की भाषा तत्सम खड़ी बोली है। जो प्रसाद गुण का थोड़ा अभाव रखती है।

प्रासंगिकता - इन पंक्तियों में राजनीति के आदर्शवादी होने की बजाय व्यावहारिक होने की बात कही गई है। यही व्यावहारिक राजनीति एवं कूटनीति वर्तमान की आवश्यकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

न में प्रश्न
रिक्त कुछ

not write
xcept the
umber in

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) दिव्यो, मैं मृत्यु से भय नहीं मानता...मृत्यु क्या है? अस्तित्व का अन्त! जिसका अस्तित्व नहीं, जिसे अनुभूति नहीं, वह भय भी अनुभव नहीं कर सकता। भय है जीवित रह कर पीड़ा और पराभव सहने में, भय है जीवन भर की पीड़ा और पराभव से। तुम्हें अंक में लेकर समाप्त हो जाने से कौन इच्छा अपूर्ण रह जायेगी? फिर उसमें भय क्या? वह सुखद अस्तित्व का सुखद अन्त है परन्तु मैं युद्ध में पराक्रान्त होकर, पराभूत होकर जीवन भर तिल-तिल कर मरने की कल्पना सहन नहीं कर सकता। जीवन की सार्थकता अधिकार और सामर्थ्य में ही है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ क्रांतिवादी लेखक यशपाल के ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से ली गई है। इन पंक्तियों में पृथुसेन युद्ध पूर्व ~~करके~~ दिव्या को समझाता है।

व्याख्या - पृथुसेन दिव्या से कहता है कि वह युद्ध में उसकी मृत्यु से निश्चिंत रहे। वह मृत्यु से भय नहीं मानता। चूंकि जिसका अस्तित्व ही नहीं वह मृत्यु से भय नहीं करता। वह कहता है कि सुखद अन्त होने पर ही जीवन की सार्थकता है।

इन पंक्तियों में वर्ण व्यवस्था के कारण हो रहे ~~भे~~ भेदभाव की पीड़ा व्यक्त की गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(1) विशेष

इन पंक्तियों में प्रगतिवादी विचारधारा के सिद्धांत को प्रकट किया गया है।

(2) वर्ण व्यवस्था के भेदभाव के संदर्भ में पृथुसेन अन्यत्र भी कहता है -

"जन्म का अपराध? यदि वह अपराध है, तो उसका मार्जन किस प्रकार संभव है।

(3) इन पंक्तियों की भाषा खड़ी बोली है, जो ऐतिहासिक आवरण के कारण तत्समी हो गई है।

(4) प्रासंगिकता - अंतिम पंक्ति 'जीवन की सार्थकता अधिकार एवं सामर्थ्य में ही है।" वर्तमान समय में लोकतंत्र की महत्ता को उजागर करती है क्योंकि लोकतंत्र में व्यक्ति को सभी अधिकार प्राप्त होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) पर प्यार की बेसुध घड़ियाँ, वे विभोर क्षण, तन्मयता के वे पल, जहाँ शब्द चूक जाते हैं, हमारे जीवन में कभी नहीं आये। तुम्हीं बताओ, आये कभी? तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी, एक क्षण के लिये भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देने वाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ नई कहानियों के संकलन 'एक दुनिया समानान्तर' (राजेन्द्र यादव) की कहानी 'यही सच है' (मन्नू भंडारी) से ली गई है।

इन पंक्तियों में प्रेम में विचलन की स्थिति को दर्शाया गया है।

व्याख्या - लेखिका पूर्वदीप्ति में जाकर सोचती है कि निशीथ के साथ उसने जिस तरह के प्रेम का अनुभव किया वैसा प्रेम का अनुभव संजय के साथ नहीं हुआ।

विशेष -

① नई कहानी के दौर में सहज प्रवृत्तियों को प्रकट करने पर बल दिया गया। इसमें यह भी सम्मिलित है कि - प्रेम कितना ही गहरा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है विचलन हीन नहीं होता।

(2) प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेम की रोमानी तथा गैर-रोमानी दशा में अन्तर स्पष्ट करती है।

(3) उक्त पंक्तियाँ चेतना प्रवाह शैली का प्रमुख उदाहरण है।

(4) इन पंक्तियों की भाषा तत्समी खड़ी बोली है।

प्रासंगिकता - वर्तमान समय में जिस तरह के व्यावहारिक प्रेम की चर्चा की जाती है, वह नई कहानी के दौर से ही साहित्य का भाग बनना आरंभ हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

फणीश्वरनाथ रेणु ने ~~मे~~ मेरीगंज को आधार मानकर 'मैला आँचल' की रचना की थी तथा इसी के आधार पर गाँवो की तत्कालीन दशा का वर्णन किया।

वस्तुत: रेणु ने भूमिका में ही लिखा है कि -

" यह है ~~मेरीगंज~~ मैला आँचल × × × कथानक है पूर्णिया. इसके एक हिस्से के एक गांव को ही पिछड़े गाँवों का प्रतिनिधि मानकर साहित्य के धरातल पर आ खड़ा हुआ हूँ।"

मैला आँचल मे रेणु ने मेरीगंज के सामाजिक। आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन को उसी रूप में प्रकट किया है, जैसा वह है।

सामाजिक विद्रूपताओ को उजागर करते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हुये उन्होंने जाति व्यवस्था, नारी के प्रति शोषण तथा धार्मिक आडम्बरों को उजागर किया। ये सब लक्षण उनसे पूर्व गोदान में परिलक्षित होते है तो वर्तमान समय में भी ये ही लक्षण ग्रामीण समाज का आधार तय करते है।

गाँवों की आर्थिक स्थिति को दर्शाते हुये रेणु ने डॉ प्रशान्त के माध्यम से कहलवाया है कि - " गरीबी और जहालत इस रोग के दो कीटाणु है। वर्तमान भारत इन दोनों कीटाणुओं से मुक्त नहीं हो पाया है।

रेणु ने खन्दार चक्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि ग्रामीण समाज में गरीबी उत्पादन की कमी के कारण नहीं अपितु वितरण की असमानता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का परिणाम है। उनसे पूर्व गुप्त जी तथा प्रेमचन्द यह समस्या मुखर रूप से उठा चुके थे, जो आज तक जारी है।

'मैला आँचल' की सबसे बड़ी समस्या जन चेतना का अभाव है। जिस गाँव की मूल समस्या गरीबी तथा भुखमरी हो, वहाँ किसी तरह की राजनीति तथा अर्थशास्त्र कार्य नहीं करता।

'मैला आँचल' में अधिकांशतः मेरीगंज में सामन्ती शोषण, जातीय वर्चस्व की लड़ाई तथा किसानों की समस्या जिस रूप में उभारी गई है, वह बेहद वास्तविक है।

चूंकि मेरीगंज में जो समस्याएँ उभारी गई है, वे केवल मेरीगंज की ही समस्या नहीं है बल्कि तत्कालीन सम्पूर्ण राष्ट्र के गाँवों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में व्याप्त थी। जिस प्रकार गोदान में ~~प्रेमचन्द~~ सेमरी और बेलारी का नाम नहीं बताते उसी तरह मेरीगंज भी प्रत्येक गांव की स्थिति को दर्शाता है।

रेणु ने स्पष्ट करते हुये कहा भी है कि, "इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी है, ~~कीचड़~~ गुलाब भी है।" अर्थात, व्यक्त यथार्थ वास्तविकता को दर्शाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रंगमंचीयता के धरातल पर 'भारत-दुर्दशा' और 'स्कंदगुप्त' की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी नाटक की पूर्णता तब मानी जाती है, जब उसका रंगमंच पर सफल प्रदर्शन संभव हो। इस संदर्भ में 'भारत-दुर्दशा' तथा 'स्कन्दगुप्त' में कई समानताएं एवं विषमताएं उपस्थित है।

चूंकि सभी समानताएं रंगमंच के लिए दोनो को समान रूप से उपयोगी सिद्ध करती है अतः दोनो की रंगमंचीयता मे विद्यमान विषमताएँ प्रमुख है। यही उनकी तुलना का प्रमुख आधार हो सकती है -

① 'भारत-दुर्दशा' नाटक में छः अंक तथा छः दृश्य है, जबकि स्कन्दगुप्त नाटक में दृश्यों की अधिकता (35 दृश्य) रंगमंचीयता को दुरूह बनाती है।

② दृश्यों की संख्या के अतिरिक्त दृश्यों की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जटिलता का स्तर भारत-दुर्दशा में नहीं के बराबर है। जबकि स्कन्दगुप्त में कठिन दृश्यों की उपस्थिति उसे रंगमंच से दूर करती है। स्कन्दगुप्त में बाढ़ का दृश्य तथा युद्ध का दृश्य का मंचन कठिन है।

(3) दोनो नाटककारों के विचारों के संदर्भ में यह रंगमंचीयता का अन्तर अधिक स्पष्ट हो जाता है। 'भारत-दुर्दशा' की रचना रंगकर्मियों के आग्रह पर की गई थी

जबकि 'स्कन्दगुप्त' की रचना 'सुरुचि सम्पन्न वर्ग' के लिए की गई थी न कि इनके वर्गों के लिए।

(4) स्कन्दगुप्त की भाषा की जटिलता उसे रंगमंच के लिए अनुकूल नहीं बनाती क्योंकि तत्समी शैली की दुरूहता प्रवाह में बाधक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

है, जबकि 'भारत-दुर्दशा' में साधारण खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

(5) रंग संकेतों की दृष्टि से भी 'भारत दुर्दशा' रंगमंच के अधिक करीब है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतदुर्दशा के मंचन में आसानी के कारण यह नाटक वर्तमान समय तक संचित होता है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दलित-जीवन-चित्रण की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा लेखक वही है, जो आत्म घटित यथार्थ के स्थान पर परघटित यथार्थ को लेखनी का हिस्सा बनाये।

1936 में सामाजिक परिवर्तन को ~~महसूस~~ करते हुये प्रेमचन्द ने दलित जीवन की समस्या को उठाते हुये दलित चेतना के प्रसार को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया।

दलित जीवन की समस्या को स्पष्ट करते हुये प्रेमचन्द ने वर्षों के शोषण से किस तरह दलित मानसिकता हीनता से ग्रस्त हो गई है को प्रकट किया है। दुखी कहता है -

"ब्राह्मण बड़े पवित्र होते है, हमारी खटोली पर क्यों बैठेंगे।"

दलितों को जिस धार्मिक शास्त्रों के द्वारा शोषित किया जा रहा था वे उसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पहचान पाने में असमर्थ थे और यही शास्त्र उनके शोषण को दृढ़ता प्रदान करते थे।

"आग की बड़ी सी चिंगारी बुधी के सिर पर पड़ गयी। मन ही मन सोचने लगा यह पवित्र ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने का फल है।"

दलितों के प्रति समाज में हो रहे दोहरे व्यवहार को उजागर करते हुये प्रेमचन्द ने स्पष्ट किया है, जिस दलित के द्वारा काटी गई लकड़ी का उपयोग ब्राह्मणों द्वारा खाना बनाने में होता है, उसी की आग उनके लिए अपवित्र हो जाती है।

दलित शोषण को उजागर करने के पश्चात, प्रेमचन्द ने उभरती हुई दलित चेतना को भी प्रकट किया। दलित में 'स्व' की बढ़ती मांग तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिस्सा थी-

"उधर गोंड ने चमरौने में जाकर कह दिया- खबरदार मुर्दा उठाने मत जाना। अभी पुलिस तहकीकात होगी।"

इस प्रकार प्रेमचन्द ने केवल सद्गति कहानी में ही नहीं बल्कि कफ़न तथा गोदान में दलित जीवन का यही कड़वा यथार्थ प्रकट किया है अर्थात् प्रेमचन्द की आँखें अँधेरे को देखने का प्रयास कर रही हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

8. (क) 'दिव्या' किसी देश की गौरवगाथा मात्र नहीं है, अपितु आगे की दिशा तलाशती है।' अपने विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'दिव्या' यशपाल कृत प्रमुख उपन्यास है, जो ऐतिहासिकता के आलोक में वर्तमान समस्याओं को उजागर करता है।

यशपाल ने दिव्या की भूमिका मे स्पष्ट किया है कि -

" दिव्या इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना मात्र है, लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र मे यथार्थ का रंग भरने का प्रयास किया है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि दिव्या मे वर्णित नारी समस्या वर्तमान समस की नारी समस्याओं को न केवल उठाती है, बल्कि दिव्या के द्वारा किस तरह परिस्थितियों का परिवर्तन किया गया के ~~द्वारा~~ माध्यम से मानव को भोक्ता नहीं कर्त्ता के रूप में स्थापित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करती है।

मार्क्सवाद की अवधारणा है 'प्रैक्सिस की अवधारणा', जिसके अनुसार मानव अपनी परिस्थितियों में परिवर्तन करता है। ये पंक्तियाँ तत्कालीन ही नहीं वरन वर्तमान तथा भविष्य के लिए प्रासंगिक है।

यशपाल ने इतिहास के संदर्भ में कहा है कि- इतिहास विश्वास की नहीं विश्लेषण की वस्तु है ××× वर्तमान में अपने आप को असफल पाकर अतीत में अपनी क्षमता का सामर्थ्य पाते है।"

यह विचारधारा वर्तमान में उपस्थित समस्याओं को निपटाने में सहायक हो सकती है क्योंकि वर्तमान की अधिकांश समस्या इतिहास पर विश्वास से उत्पन्न हुई है न कि विश्लेषण से।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या में वर्णित इहलोकवाद की ~~सम्प्रथा~~ धारणा, धार्मिक आडम्बरों को दूर करने में सहायक है। वर्तमान समाज इन्ही धार्मिक आडम्बरों में जकड़ा हुआ है।

दिव्या की मूल प्रेरणा 'नारी' के संदर्भ में प्रकट होती है, जो नारी को भोग्या नहीं सृष्टि मानती है। मारिशा के माध्यम से यशपाल ने संकेत किया है कि नारी शोषण का मूल कारण सामाजिक है-

"नारी प्रकृति के विधान से नहीं समाज के विधान से भोग्य है।"

अन्त में नारी की मूल चाहत स्पष्ट करते हुये ~~यश~~ दिव्या कहती है कि उसे न तो राजप्रसाद का सुख चाहिए और न ही निर्वाण वह केवल अपने पुरुष समकक्ष

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के बराबर अधिकार चाहिए है।

वर्तमान में लैंगिक समानता की जो चर्चा है, वह उसी समकक्षता की स्थापना के लिए है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि दिव्या ऐतिहासिकता के आलोक में वर्तमान को उकायित करता उपन्यास है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आषाढ़ का एक दिन मोहन राकेश कृत 'अस्तित्ववादी दर्शन' पर आधारित उपन्यास है। मोहन राकेश ने ऐतिहासिकता के आलोक में वर्तमान समस्याओं को उजागर किया है।

वर्तमान में बढ़ रहे शहरीकरण के कारण मानव अपने मूल व्यक्तित्व से कट गया है, जिस कारण वह निरर्थकता बोध का शिकार हो गया है। इसी निरर्थकता बोध के कारण विसंगति तथा यंत्रणाएँ सहने की मजबूरी है।

व्यक्ति का जीवन जैसा होना चाहिए तथा जैसा है में मध्य उपस्थित इसी अंतराल को मोहन राकेश ने कालिदास के माध्यम से प्रकट किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

मोहन राकेश ने स्वयं लिखा भी है कि - "मेरी रचनाएँ संबंधों की यंत्रणा को अकेले में जीते लोगों के संदर्भ में आज के लिए है।"

'आषाढ़ का एक दिन' की प्रासंगिकता का एक संदर्भ यह भी है कि निर्णय हमेशा स्वयं लेने चाहिए। कालिदास की भाँति 'अभावपूर्ण जीवन' की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं।

आषाढ़ का एक दिन में वर्णित शहरी-ग्रामीण अन्तर वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। ग्रामीण लोग प्रकृति से जुड़े रहकर संरक्षण करते है जबकि शहरी - संवेदनहीनता के कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं उत्पन्न हो गई है।

'आषाढ़ का एक दिन' में वर्णित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पीढ़ी संघर्ष वर्तमान में भी उपस्थित है। प्रशासनिक अक्षमता को प्रकट करता यह प्रसंग अपनी ऐतिहासिकता को त्यागकर वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत होता प्रतीत होता है।

आषाढ़ का एक दिन की एक मूल समस्या सर्जनात्मकता तथा सत्ता का द्वंद्व है, जो वर्तमान में भी उपस्थित है।

मल्लिका का वेश्या बन जाना वर्तमान आर्थिक सुरक्षा के अभाव में महिलाओं पर आने वाले संकट को प्रकट करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आषाढ़ का एक दिन वर्तमान संदर्भों को प्रकट करने वाला नाटक है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रामविलास शर्मा के निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' के निहितार्थ पर प्रकाश डालिये। 15

रामविलास शर्मा ने 'तुलसी साहित्य के सामन्त विरोधी मूल्य' निबंध में तुलसी पर लगाये गये आक्षेपों का खंडन किया है।

रामविलास शर्मा ने स्पष्ट किया है कि तुलसी के राम सभी नीची जाति वालों को " ~~भ्राता सम भाई~~ भरत सम भ्राता कहते है, तो उनके काव्य में जाति तथा वर्ण के प्रति आग्रह उनका न होकर तत्कालीन उच्च वर्णों के लोगों का होगा। वे कहते है -

" जातिगत पूर्वाग्रह उन लोगो की देन है, जो पहले से ही ऐसा करते आ रहे थे।"

दूसरी ओर तुलसी के राम तत्कालीन परिस्थितियों में जहाँ मध्यकाल में इन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कोल - ~~किरि~~ किरातों का शिकार होता था। उस समय गले से लगाते है, जो तुलसी की प्रगतिशीलता को प्रकट करते है।

नारी के संदर्भ में तुलसी ने लिखा है-

" कत विधी सृजी नारी जग माही
पराधीन सपनेहूँ सुख नाहिं।"

किन्तु रामचरित्र मानस में जाति व्यवस्था के पोषकों ने तुलसी को अचानक नारी विरोधी सिद्ध कर दिया।

इसी तरह तुलसी ने तत्कालीन समय कलियुग की अवधारणा देते हुये कहा था कि -

" कलि बारहि बार दुकाल पड़ै।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

अर्थात् वे तत्कालीन भुखमरी की समस्या

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से दुखी थे और तत्कालीन समय में भुखमरी की समस्या केवल दलितों तक ही विद्यमान थी।

इस तरह रामविलास शर्मा तुलसी की प्रगतिशील चेतना को स्थापित करने का प्रयास करते है। साथ ही वे तुलसी पर तत्कालीन आरोपों का खंडन भी प्रस्तुत करते है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation